शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय संस्कृति की अनुपम विशेषताएं

प्रो. बनवारी लाल जैन
विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं, नागौर, राजस्थान

शोध संक्षेप

व्यक्ति का जीवन, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, विचार आदि संस्कृति के परिणाम हैं। जैसी हमारी संस्कृति होगी वैसे ही हम होंगे। मनुष्य संस्कृति का विकास करता है पशु नहीं। मनुष्य के पास शारीरिक व मानसिक क्षमताएं होती है। इसी विशेषता व क्षमता के कारण मनुष्य ने संस्कृति का निर्माण किया है। भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य संस्कृतियां की अपेक्षा अनुपम गुण वाली संस्कृति रही है। यहां की संस्कृति अमर, चिरकाल से स्थायी, धर्मप्रधान, समन्वय, वर्ण, आश्रम, पुरूषार्थ, अहिंसा, अध्यात्म, सर्वांगीणता से ओत-प्रोत रही है। भारतीय संस्कृति के उन अनुपम लक्षणों को अभिहित किया है, जो हजारों साल बीत जाने के बाद भी आज जीवित है।

मुख्य शब्द - संस्कृति, अक्षुण्ण, सहिष्णुता, समन्वयवादी, ग्रहणशीलता, अनुकूलता, सर्वांगीणता।

प्रस्तावना

सम् उपसर्ग+कृ धातु+क्तिन प्रत्यय के योग से संस्कृति शब्द निष्पन्न होता है। संस्कृति शब्द परिष्कृत कार्य या उत्तम स्थिति का बोध कराता है। अर्थात् मनुष्य की सहज प्रवृत्तियों नैंसर्गिक शक्तियों और उनके परिष्कार का द्योतक है। संस्कृति शब्द से किसी भी विशिष्ट भूखण्ड की मानसिक क्षमता एवं प्रगति का एक दीर्घकालीन इतिहास प्रकट होता है। संस्कृति शब्द संस्कार शब्द का वंशज है। जिसका अभिप्राय शुद्ध करने या सुधारने से है। मानसिक क्षेत्र में मानव की प्रत्येक 'सम्यक् कृति' संस्कृति की अंगभूत हो जाती है। जिसमें सभी कलाओं, ज्ञान, विज्ञानों, धर्म, दर्शन तथा विभिन्न सामाजिक प्रथाओं को ग्रहण किया जा सकता है। (मन और आत्मा की तृप्ति के लिए मनुष्य जो विकास अथवा उन्नति करता है, वह समग्र रूप से संस्कृति के अन्तर्गत आता है)।

संक्षेप में संस्कृति किसी भी समाज में उसके सदस्यों के रहने का ढंग है। समाज के आधारभूत विचार यथा रीति-रिवाज, परम्पराएं, मशीन, उपकरण, नैतिकता, कला, विज्ञान, धर्म, विश्वास, सामाजिक संगठन, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था आदि को सम्मिलित किया जाता है। अंग्रेजी कल्चर शब्द लैटिन भाषा के कल्चुरा से बना है जिसका अर्थ है सुधरी हुई दशा। अर्थात् संस्कृति मनुष्य के सीखे गये अच्छे अनुभवों की परिणति है।

श्री हरदत्त वेदालंकार ने संस्कृति निर्माण की इस प्रक्रिया के लिए अत्यन्त सुन्दर उपमान प्रस्तुत किया है। संस्कृति की तुलना आस्ट्रेलिया के निकट समुद्र में पाई जाने वाली मूंगे की भीमकाय चट्टानों से की जा सकती है। मूंगे के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

असंख्य कीड़े अपने छोटे घर बनाकर समाप्त हो गए, फिर नए कीड़ों ने घर बनाये उनका भी अन्त हो गया। इसके बाद उनकी अगली पीढ़ी ने भी यही किया, और यह क्रम हजारों वर्ष तक निरन्तर चलता रहा। आज उन सब मूंगों के नन्हें-नन्हें घरों ने परस्पर जुड़ते हुए विशाल चट्टानों का रूप धारण कर लिया है। संस्कृति का भी इसी प्रकार धीरे-धीरे निर्माण होता है और उसके निर्माण में हजारों वर्ष लगते हैं। मनुष्य विभिन्न स्थानों पर रहते हुए विशेष प्रकार के सामाजिक वातावरण, संस्थाओं, प्रथाओं, व्यवस्थाओं, धर्म, दर्शन, लिपि, भाषा तथा कलाओं का विकास करके अपनी विशिष्ट संस्कृति का निर्माण करते हैं। भारतीय संस्कृति की भी इसी प्रकार रचना हुई है। उपनिषदों में निरन्तर कार्यशील रहने के लिए अत्यन्त सुन्दर रूपक उपलब्ध होता है- ''सोता हुआ व्यक्ति कालिकाल है, निद्रा समाप्त कर जंभाई लेता हुआ ही द्वापर युग है। आलस्य त्याग कर उठता हुआ व्यक्ति त्रेता समय है और चलता हुआ ही सतयुग कहलाता है। इसलिए निरन्तर चलते रहो, चलते ही रहो।''

अक्षुण्ण प्रवाह

मिस्त्र, सुमेर, काबुल, यूनान और रोम की संस्कृति विलुप्त होकर अतीत की कहानी मात्र रह गई है। भारतीय संस्कृति आज भी अपनी पहचान बनाये हुई है। 2500 वर्ष पूर्व की भांति लोग राम, कृष्ण और ब्रह्म की पूजा करते हैं। आज भी गंगा, यमुना, गोदावरी आदि नदियां को पवित्र माना जाता है। संस्कृत भाषा को आज वही सम्मान है जो प्राचीन समय में था। विश्व की अनेक संस्कृति विलुप्त हो गई, लेकिन सिन्धु घाटी सभ्यता से पूर्व प्रारम्भ हुई भारत भूमि की संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। शायर इकबाल ने कहा है -

''यूनान मिश्र रूमां सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाकी नामो निशां हमारा।
कोई बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा।।''

विचार सहिष्णुता

भारतीय संस्कृति ने हर मनुष्य को विचार, धर्म, विश्वास की स्वतन्त्रता दी है। सम्राट् अशोक ने कहा है- ''मनुष्य को दूसरे के धर्मों को सुनना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए। जो मनुष्य अपने धर्म को पूजता है और दूसरे धर्म की निन्दा करता है, वह ऐसा करते हुए अपने धर्म को बड़ी भारी हानि पहुंचाता है।' विश्व की अन्य संस्कृतियों ने दूसरों के विचार, नवीन प्रवृत्तियों को सहन नहीं किया। उदाहरणार्थ सुकरात को देखा जा सकता है जिन्होंने सत्य की रक्षा के लिए विषपान किया। भारत में सभी मत-मतान्तरों को समान भाव से सम्मान दिया जाता है, उनके विचारों को सुनने व बोलने की स्वतन्त्रता है। गीता में कहा है- ''सब देवताओं को किया हुआ नमस्कार कृष्ण को प्राप्त होता है।''

ग्रहणशीलता

भारत में आयी द्रविड़, यूनानी, मुगल, ईसाई, सीथियन सभी संस्कृतियों के विभिन्न सुन्दर अंशों को ग्रहण कर लिया, जैसे वैदिक युग में इन्द्र देवता थे, द्रविड़ प्रभाव से शिव प्रमुख देवता बन गये। अतः जो प्रथा, व्यवस्था उत्पन्न हुई वह नष्ट नहीं हुई उसे इस प्रकार ग्रहण किया कि वह सदैव बनी रही। ज्योतिष के क्षेत्र में यूनानी तथा रोमन सिद्धान्तों को ग्रहण किया, वह भी आज तक बना हुआ है। अन्य जातियों से ज्ञान

ग्रहण करने में कभी भी हीनता की भावना उत्पन्न नहीं हुई।

आध्यात्मिकता

भारत में भौतिकता के स्थान पर आध्यात्मिकता के विकास पर विशेष बल दिया है। शस्त्रबल की अपेक्षा तपस्या, धूर्तता की अपेक्षा सत्यता, धन की अपेक्षा धर्म, पर पीड़ा की अपेक्षा परोपकार, शरीर की अपेक्षा आत्मा की अमरता पर बल दिया गया है।

धर्म प्रधानता

भारतीय संस्कृति में धर्म एक व्यापक जीवन पद्धति है। धर्म केवल मंदिर में घण्टा बजाना, मूर्तियों का श्रृंगार करना, मंदिर में मूर्ति के समक्ष प्रसाद चढ़ाना, मंदिर की परिक्रमा लगाना, मंदिर में दण्डवत झुकना, माथे पर तिलक लगाना, मंदिर में आरती करना, मंदिर में भजन बोलना धर्म नहीं है, धर्म सत्कर्म करना है।

धर्म जो नहीं देखना चाहिए, उसे देखने से रोकता है वह धर्म है, धर्म जो नहीं सुनना चाहिए उसे सुनने से रोकता है वह धर्म है, धर्म जो नहीं छूना चाहिए उसे छूने से रोकता है वह धर्म है, धर्म जो नहीं बोलना चाहिए उसे बोलने से रोकता है वह धर्म है।

"धरम न दूसर सत्य समाना।
आगम निगम पुरान बाबान।।"

असतो मा सद्गम, तमसो मा ज्योतिर्गमयः मृत्योमोऽमृतं गमय।

विपत्ति, बाधा, परेशानी, कष्ट, दुःख, व्यवधान आने पर आज भी हमारी संस्कृति में धर्म को याद किया जाता है।

समन्वयवादी

जनजातीय, शक, हूण, ईसाई, हिन्दू, मुसलमान आदि सभी संस्कृतियों के प्रभाव से भारतीय संस्कृति में समन्वय व एकता की भावना पैदा हुई। हिन्दू और मुस्लिम धर्म में समन्वय हेतु महापुरूषों ने एकता स्थापित करने का प्रयास किया। डाडवेल ने कहा कि भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है जिसमें अनेक नदियां आकर मिलती हैं। शक, हूण, मुगल, तुर्क, यूनानी, अंग्रेज भारत में आये और सभी यहां आकर घुल मिल गये। विविध संस्कृतियों के प्रभाव को हमारी संस्कृति ने आत्मसात किया।

वर्णाश्रम

भारतीय संस्कृति की विलक्षणता है- वर्ण व आश्रम व्यवस्था। समाज में श्रम विभाजन हेतु चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्ण की रचना की गई। ब्राह्मण समाज बुद्धि, क्षत्रिय शक्ति, वैश्य अर्थ व्यवस्था और शूद्र समाज सेवा का कार्य करता है। वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य आश्रम 1 से 25 वर्ष, गृहस्थाश्रम 26 से 50 वर्ष, वानप्रस्थाश्रम 51 से 75 वर्ष, संन्यासाश्रम 76 से 100 वर्ष तक माना गया है। यह व्यवस्था विश्व की किसी भी संस्कृति में नहीं है। आश्रमों का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की पूर्ति करना है।

विविधता में एकता

भारतीय संस्कृति क्षेत्र, जाति, भाषा, धर्म के आधार पर विविध रूप में परिलक्षित है, लेकिन पर्व, जयन्ती, त्यौहारों आदि में जीवन की एकरूपता है। देश के सभी क्षेत्र में विभिन्न धर्मावलम्बियों के उपासना के स्थान बने हुए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में बसे परिवार, विवाह, रीति-रिवाज, वस्त्र शैली आदि में पर्याप्त भिन्नता के बाद भी सांस्कृतिक एकता है। रक्षा बन्धन, दशहरा, दीपावली, ईद आदि त्यौहारों का आयोजन सम्पूर्ण देश में होता है। रंगभेद, जाति

भेद, भाषा भेद होते हुए भी आंतरिक रूप से हम सभी घुले-मिले हुए हैं।

अनुकूलनशीलता

भारतीय संस्कृति में परिस्थितियों के अनुकूल ढ़लने की अद्भुत क्षमता है। अनेक विषम परिस्थितियां भी आयी लेकिन सभी को झेलते हुए आगे बढ़ती रही। भारतीय परिवार, जाति, धर्म एवं संस्थाएं सत्य के साथ अपने को परिवर्तित करती रही है।

कर्म व पुनर्जन्म

अच्छे कर्म करने वाले को अच्छा फल व बुरे कर्म करने वाले को बुरा फल मिलता है। यह भारतीय संस्कृति के विचार रहे हैं। उनका पुनर्जन्म उसी फल के अनुसार मिलता है। कर्म में राग-द्वेष, आसक्त आदि भाव रखे बिना कार्य करने पर बल दिया है।

सर्वांगीणता

भारतीय संस्कृति में चार पुरूषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के विकास पर बल दिया। सभी का सर्वांगीण विकास हो। कोई भी गरीब-अमीर, शिक्षित-अशिक्षित आदि का भेदभाव नहीं रखते हुए अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति अति प्राचीन व गौरवपूर्ण है। सहिष्णुता व ग्रहणशीलता, गत्यात्मक प्रकृति, विभिन्नता में एकता, आंतरिक एकता, समाज व्यवस्था, संयुक्त परिवार, कर्म और पुनर्जन्म, सत्य, अहिंसा, अस्तेय के सिद्धान्त की गूंज, सूफी, योग, साधना और रहस्यवाद का दीपक प्रज्ज्वलित किया जिसके कारण उसका अतीत वर्तमान में भी जीवित है। भौतिक सुख और भेग लिप्सा की अपेक्षा अध्यात्म को प्रबल किया है। समाज के साथ सदैव अनुकूलता को बनाये रखा है। वसुधैव कुटुम्बकम् में अपने आपको संजोये रखा है। यहां की संस्कृति किसी एक जाति, धर्म, वर्ण या किसी व्यक्ति विशेष के पक्ष की नहीं रही है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' अर्थात् सभी सुखी हों की भावना में समाहित होकर अक्षुण्ण बनी हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 गुप्ता, मोतीलाल (2018), भारत में समाज, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

2 शर्मा, जी.एल. (2015) सामाजिक मुद्दे रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।

3 लवानिया, एम.एम., जैन, शशि के. (2008) समाजशास्त्र के सिद्धान्त, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर।

4 पाण्डेय, रामशकल (2008), उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

5 पाठक एवं त्यागी (2008), शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

6 सिन्हा, मंजरी, सिन्धु, आई. एस. (2007), विकासोन्मुख भारतीय समाजमें शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।